नेशनल एसोसिएशन ऑफ ज्यॉग्राफर्स, इण्डिया

हिन्दी भाषा के शोध प्रपत्रों के लेखों की प्रस्तुति हेतु दिषा निर्देष

हर्ष का विषय है कि नागी द्वारा हिन्दी भाषा में शोध पत्रिका प्रकाषन का संकल्प नागी के 37 वें राष्ट्रीय अधिवेषन द्वारा जम्मू विष्वविद्यालय में लिया गया था तदानुसार नागी की हिन्दी भाषा में शोध पत्रिका का प्रकाषन कार्य जारी है। आषा की जाती है कि हिन्दी शोध पत्रिका का विमोचन नागी के 38 वें वार्षिक अधिवेषन, मैसूर विष्वविद्यालय में सम्पन्न होगा।

यह एक 'पीयर रिव्यूड' शोध पत्रिका है जो वर्ष में दो बार प्रकाषित होगी। इसमें भौगोलिक विषय, सामाजिक विज्ञान एवं सम्बद्ध विषुद्ध विज्ञानों के सभी विषयों के मौलिक शोध प्रपत्र, शोध/पुस्तक समीक्षा, भारत में भूगोल विषय की प्रगति आदि से संबंधित योगदान प्रकाषित किये जायेंगे। शोधकर्ता हिन्दी भाषा में अपने शोध प्रपत्र भेज सकते हैं। यह शोध पत्रिका अंग्रेजी भाषा में प्रकाषित नागी के 'एनल्स' की भांति नियमित रूप से प्रकाषित होगी।

शोध प्रपत्र भेजते समय कृपया निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दें –

घोषणा – प्रत्येक शोध प्रपत्र के लेखक/लेखकों द्वारा शोध प्रपत्र के साथ यह घोषित करना आपेक्षित है कि –

- संबंधित शोध प्रपत्र मौलिक है तथा कहीं प्रकाषित/प्रकाषनाधीन नहीं है।
- लेखक/लेखकगण प्रस्तुत क्रम में शोध प्रपत्र के लेखक हैं।

शोध प्रपत्र –

शोध पत्र 5000 टंकित शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए। शोध प्रपत्र माइक्रोसाफ्ट ऑफिस वर्ड (Microsoft Office Word) कृति देव 010 के फोंट साइज 12 में कम्प्यूटर द्वारा टंकित होना चाहिए। सभी आरेख 'एक्सेल' (Excel) में एवं मानचित्र 'जेपीजे' (JPJ) में दिये जायेंगे।

इसे ए.–4 आकार के कागज पर बाएं हाषिए पर 1.5'' तथा शेष तीनों ओर 1'' का हाषिया छोड़कर टंकित होना चाहिए। टंकित रेखाओं का अंतराल 1.5 होना चाहिए।

शीर्षक – शीर्षक पाण्डुलिपि पर अवष्य दें, किन्तु अपना पूरा नाम, पता, संस्था जहां पर अध्ययन अथवा अध्यापन कार्य सम्पादित किया गया हो, दूरभाष अथवा मोबाइल, फैक्स, ई–मेल, पत्राचार हेतु अलग पृष्ठ अवष्य दें।

मूल लेख पर लेखक/लेखकों का नाम, पता, सम्बद्धता, नगर, इ–मेल, मोबाइल नं. आदि उल्लिखित नहीं होना चाहिए। जिससे पुनरीक्षण कार्य को पारदर्षी बनाया जा सके। इसे अलग से एक अतिरिंक्त पृष्ठ पर देना चाहिए।

प्रस्तुत किये गये लेख का कॉपी राइट, 'नागी' के नाम रहेगा।

शोध प्रपत्र सम्पादक के नाम एक पत्र सहित ''मौलिक एवं अप्रकाषित'' टिप्पणी के साथ निम्नलिखित पते पर <u>डाक द्वारा</u> भेजा जा सकता है –

– प्रो. वीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, प्रधान सम्पादक, द्वारा नागी सचिवालय, भूगोल विभाग, दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स, दिल्ली विष्वविद्यालय, दिल्ली –110007

<u>ई–मेल द्वारा</u> निम्न पते ***e-mail : shrivastava2015nagi@gmail.com*** पर भेजा जा सकता है ई–मेल द्वारा भेजने पर भी प्रपत्र की सी.डी. एवं दो टंकित प्रतियां भेजना अनिवार्य है।

- शोध प्रपत्र की स्वीकृति/अस्वीकृति का अंतिम निर्णय संबंधित प्रसंग के दो विषेषज्ञों की गोपनीय अनुषंसा पर संपादक मण्डल द्वारा लिया जाता है। इस संबंध में अंतिम निर्णय प्रधान सम्पादक का है।
- लेखक के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवष्यक नहीं है।
- शोध प्रपत्र में आरेख, मानचित्र, रेखाचित्र, छायाचित्र आदि का प्रयोग बीच में न करते हुए अंत में संलग्नक पृष्ठों पर करें। मूल लेख में यथा स्थान कोष्टक में संबंधित क्रमांक लिखें।
- आरेखों एवं मानचित्रों के शीर्षक उनके नीचे दें।
- सारणी के शीर्षक उसके ऊपर दें।
- संबंधित आरेखों/सारणी आदि के मूलस्रोत–संदर्भ उनके नीचे दें।
- प्रत्येक शोध प्रपत्र के साथ 150 शब्दों का शोध सारांष एवं कम से कम तीन नवसृजित मूल शब्दावली (key words) का उल्लेख अवष्य करें।

शोध–संदर्भ पद्धति

संदर्भ ग्रंथ सूची में लेखक का उपनाम, मुख्यनाम, प्रकाषन का वर्ष, पुस्तक अथवा ग्रंथ का नाम एवं प्रकाषक का नाम दें।

उदाहरण –

- प्रमीला कुमार (2001): *छत्तीसगढ़ एक भौगोलिक अध्ययन,* मध्यप्रदेष हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।

- Dickinson, R.E. (1969): *Makers of Modern Geography,* London, Routledge & Kegan Paul.

शोध पत्रिका के सदंर्भ के संबंध में लेखक का उपनाम, नाम, लेख का शीर्षक, पत्रिका का नाम, अंक, वर्ष पृष्ठ क्रम संख्या आदि दें। सभी सदंर्भों को उनके वर्ण माला क्रम में प्रपत्र के अंत में सूची बद्ध कर दें।

उदाहरण –

- खातून, आरिफा (2012) : शहरी मलिन बस्तियों में मूलभूत बुनियादी सुविधाओं का अभाव एवं सरकारी योजनाएं, *मंगलम्* – आई एस एस एन 09676–8149, वर्ष 03, भाग V (अगस्त), पृष्ठ 14–26।
- Rammohan, H.S. and Nair, K. (1991): Annual Variability of Rainfall Over Kerala State, *National Geographical Journal of India,* Vol. 37, pp 23-36.

अ–प्रकाशित शोध ग्रंथ के सदंर्भ में –

- मंसूरी, शाहिदा बेगम (2013) : *गोण्ड जनजाति : प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य संरक्षण (सिवनी जिला म.प्र., के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन),* रानी दुर्गावती विष्वविद्यालय, जबलपुर के समाज विज्ञान संकाय के अंतर्गत भूगोल विषय में पीएच. डी. उपाधि हेतु स्वीकृत शोध प्रबंध (अप्रकाषित)।

पुनर्निरीक्षण पद्धति – प्रत्येक शोध प्रपत्र दो विषेषज्ञों द्वारा गोपनीय ढंग से पुनरीक्षित किया जायेगा। उनकी संस्तुति शोध प्रपत्र की स्वीकृति का आधार होगी।

शोध प्रपत्र की स्वीकृति के आधार हैं – शोध विषय की समकालिक सम्बद्धता, शोध विषय द्वारा ज्ञान के विकास में योगदान, स्पष्ट एवं तार्किक विष्लेषण, मान्य तकनीकी शब्दावली सहित परिष्कृत हिन्दी भाषा एवं सही विधि तंत्र।

सम्पादक द्वारा शोध पत्र की पाण्डुलिपि विषय–वस्तु, लेखन पद्धति, संदर्भ, मानारेखन आदि अनुपयुक्त होने पर अपने स्तर पर ही अस्वीकृत किया जा सकता है।

*****